REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

भूमण्डलीकरण और हिन्दी उपन्यास : बदलता सामाजिक परिवेश

विनोद कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी–विभाग,
भाग सिंह खालसा कॉलेज फॉर विमिन, काला–टिब्बा, अबोहर, पंजाब।
एवम् शोधार्थी (पी–एच.डी.), हिन्दी–विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

शोधपत्र सारांश :

विश्व ग्राम की संकल्पना ने एक नवीन सामाजिक संरचना को जन्म दिया। इस नवीन समाज में परंपरागत सामाजिक अवधारणाओं का कोई महत्त्व नहीं रहा। भूमण्डलीय परिवेश में व्यक्ति, परिवार और समाज क्रमशः विघटन की ओर अग्रसर हुए। पश्चिमीकरण के प्रभावस्वरूप भारतीय जीवन जीवन मूल्य खंडित होने लगे। वस्तुवाद व उन्मुक्त भोग की उत्कट लालसा ने भारतीय संस्कृति ग्रास लिया। इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों का सामाजिक परिवेश भूमण्डलीय समाज की नवीन प्रवृत्तियों का प्रामाणिक दस्तावेज है।

बीज शब्द : भूमण्डलीकरण, बाज़ारवाद, पूँजीवाद, व्यक्ति, परिवार, सामाजिक संबंध, भोगवाद।

विषय उपस्थापन :

यूं तो भूमण्डलीकरण की अवधारणा अत्यंत प्राचीन है, जिसका सूत्रपात 'उदारचरितनामतुवसुदैव कुटुम्बकम्' के साथ ही हो गया था। भारतीय चिंतन परम्परा में मानव कल्याण हेतु विश्व को एक ग्राम के रूप में अभिव्यक्ति देने की पहल हुई। भारतीय चिंतन कभी कूपमण्डूक नहीं रहा। समय–समय पर भारतीय चिंतन ने विश्व बन्धुत्व का संदेश दिया। भूमण्डलीकरण की आधुनिक अवधारणा इससे बिल्कुल विपरीत है, क्योंकि आज का भूमण्डलीकरण आर्थिक परिवेशजन्य है। पूँजी का प्रवाह, बाज़ारवाद, निजीकरण और उदारीकरण ही भूमण्डलीकरण के उपादान कारक है। पूंजी की सत्ता और बाज़ारीकरण ने जिस भूमण्डलीकरण को जन्म दिया, वह वास्तव में एक तकनीकी लड़ाई है, जिसका श्रेय 'सूचना क्रांति' को जाता है। सूचना क्रांति के माध्यम से भूमण्डलीकरण ने अतिशीघ्रता से संसार को चपेट में लिया। *"तकनीकी और संचार क्रांति ने विश्व को समेटकर एक 'विश्व ग्राम' यानी ग्लोबल विलेज में बदल दिया है। विश्व ग्राम की यह परिकल्पना मार्शल मैक्लूहान की थी, परन्तु हमारे यहाँ इस अवधारणा के मूल स्वर पहले से ही विद्यमान हैं। हमारे चिन्तक ऋग्वेद में इस अवधारणा के सूत्र खोजते हुए 'विश्वपुष्टं ग्रामे अस्मिन अनातुरम' का उद्घोष करते है।*[i] वर्तमान समय में

भूमण्डलीकरण व्यक्ति, परिवार, समाज, राज्य, राष्ट्र, साहित्य, शिक्षा, राजनीति, व्यापार, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहा है। 'भूमण्डलीकरण' की स्वरूपगत पहचान हेतु विद्वानों की परिभाषाओं पर दृष्टिपात करना उचित रहेगा।

नागेश कुमार के अनुसार– *"वैश्वीकरण एक सामाजिक–आर्थिक प्रक्रिया है, जो कि इस पथ पर धकेले गए राष्ट्रों पर गहन एवं व्यापक प्रभाव डालती है। दूसरी, यह विशेषकर तीसरी दुनिया के देशों में पूँजीवादी रुझान वाली संस्थाओं के निर्माण एवं पल्लवन की व्यूहरचना है, तीसरी, यह*

एक विचारधारा है जो कि संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व वाले यूरोपीय एवं उत्तरी अमेरिकी बहुराष्ट्रीय निगमों तथा अन्तर्देशीय निगमों का प्रभुत्व एवं आधिपत्य स्थापित करती है। जिसे नव उदारवाद कहा जाता है।[ii]

डॉ० श्याम बाबू शर्मा का मानना है कि– *"भूमण्डलीकरण का प्रधान अर्थ है– विश्व में एक ऐसे अर्थतंत्र की संरचना और वैश्विक बाज़ार का निर्माण करना जिसके अंतर्गत प्रत्येक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को अनिवार्य रूप से जुड़ना होगा। भूमण्डलीकरण का दूसरा अभिप्राय दुनिया की राजनीति को विकसित पूँजीवादी देशों तथा शक्ति संपन्न राष्ट्रों के फायदे के अनुसार संचालित करना एवं अमेरिका की साम्राज्यवादी नीति को बनाए रखना।*[iii]

अतः इन परिभाषाओं के आधार पर यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि 'भूमण्लीकरण' एक विश्व–व्यापी प्रक्रिया है। 'भूमण्डलीकरण' आर्थिकता की भूमि पर पल्लवित एक वटवृक्ष है जो राजनीति, समाज, धर्म, संस्कृति, शिक्षा आदि विविध क्षेत्रों को आच्छादित कर चुका है। येन–केन–प्रकारेण पूँजी लाभ हीं भूमण्डलीकरण का लक्ष्य है।

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में रचित हिन्दी उपन्यासों के सामाजिक परिवेश में भूमण्डलीकरण का प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है। व्यक्ति समाज निर्माण की धूरी है। विभिन्न वैयक्तिक इकाइयों की सामूहिकता में ही समाज की परिकल्पना की जा सकती है। आधुनिक भौतिकवादी युग में व्यक्ति इकाई विघटन की ओर अग्रसर है। मनुष्य तब तक मनुष्य है, जब तक उसमें मानवता का संचार है। आज का व्यक्ति 'अर्थ' के प्रभाव में आकर मानव–मूल्यों से विहीन होता जा रहा है। व्यक्ति घर, परिवार, समाज, धर्म, दया, नैतिकता, प्रेम, सौहार्द, स्नेह इत्यादि सब गुणों का त्याग कर सिर्फ 'अर्थ–प्राप्ति' को जीवन उद्देश्य मान लिया–

"आदमी के पास पैसा नहीं होता तो वह पैसे के पीछे पड़ जाता है... और पैसा कमाने के पीछे सब कुछ भूल जाता है। बीवी–बच्चे, घर–परिवार, हँसना–खेलना सब... यहाँ तक कि खुद को भी। अपनी एम्बीशन्स को भी। अपने सपनो को भी। और जब इस तरह सब कुछ खोकर खूब पैसा कमा लिया जाता है तो समझ में ही नहीं आता कि इसका और पैसा बनाने के अलावा क्या उपयोग है ?[iv]

'अर्थ–केन्द्रिता' की इस प्रवृत्ति ने व्यक्ति को 'स्व' की ओर उन्मुख किया। प्रत्येक व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत लालसा की पूर्ति को चरम लक्ष्य मानने लगा। व्यक्तिगत जीवन शैली अपनाने के कारण वह अपने परिवार, समाज और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से अलग–थलग पड़ चुका है–

"क्या आज की दुनिया में कोई पढ़ा–लिखा आदमी इस तरह बिना कुछ खास किए जंगल–मैदान–पहाड़ घूमता रहकर अपने जीवन को सार्थक मान सकता है? क्या कोई बिना किसी से एक ऐसा रिश्ता बनाए, जिसमें मरने तक उसके साथ रहने की कल्पना हो, कोई संबंधों की गहराई पा सकता है? या गुरु की तरह निर्भार जीने के लिए यही रास्ता है?...एक तरह से देखा जाय तो यह व्यक्ति अपने को नष्ट कर रहा है। यह सिर्फ इसका ही नुक्सान नहीं है, इस देश का, इसके समाज, परिवार सभी का नुकसान है।[v]

व्यक्ति अपने तक सीमित रहने के कारण परिवार की तरफ ध्यान नहीं दे पाता। संस्कारों के अभाव में पारिवारिक इकाई खण्ड–खण्ड हो जाती है। पारिवारिक सदस्य दिग्भ्रमित हो कर भटकाव की स्थिति में पहुँच कर परिवार के विघटन का कारण बनते हैं। इन्हीं कारणों की परिणति यह रहेगी कि 'परिवार' नामक संस्था भावी पीढ़ी के लिए महज अतीत का विषय रह जाएगा–

"बच्चे एक के जीवित रहने के बावजूद यतीम जैसे हो जाएँगे, मनोरोगी हो जाएँगे। वे बच्चे या तो डर के मारे विवाह कभी करना नहीं चाहेंगे या करेंगे भी तो अपनी इन ग्रन्थियों से एक और परिवार को बरबाद कर देंगे। क्या परिवार बरबाद होंगे तो राष्ट्र बच पाएगा ?[vi]

परिवार की मुख्य धुरी पति–पत्नी भी व्यक्तिवादी स्वच्छंदता के हनन को सामने रख कर सहज ही तलाक लेने को आतुर है। 'ए.बी.सी.डी.' उपन्यास में शीनी एक बच्चे की माँ होने के बावजूद भी अपने पति निक से तलाक लेना चाहती है क्योंकि वैवाहिक जीवन अब उसके लिए कष्टदायी स्थिति है–

"पापा मैं डाइवोर्स ले रही हूँ। अवर मैरिज इज नाट कॉम्पेटिबिल।[vii]

शीनी से तलाक लेने के पश्चात् 'निक' का नैंसी से संबंध बनना पारिवारिक बिखराव की चरम परिणति को दर्शाता है। शीनी की माँ शील द्वारा निक के दूसरे विवाह की सहमति देना नवीन पारिवारिक संरचना को उद्घाटित करता है–

"पहले निक हमारा सन इन ला था, अब सन है। मैं ही करूँगी उसकी शादी।[viii]

पीढ़ीगत अन्तराल की इस स्थिति ने पारिवारिक संवेदना को नष्ट कर दिया है। बच्चों के मन में बड़े–बुजुर्गों के प्रति कोई सत्कार की भावना नहीं रही। आधुनिक पीढ़ी की इस मानसिकता के चलते पनप रही एकल संस्कृति का बीज रूप बच्चों की परवरिश में निहित है। एकल संस्कृति के बीज रूप का संकेत चित्रा मुद्गल की इन पंक्तियों में स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है–

"बच्चों की गलती नहीं। उन्हें अपने तक सीमित रहना सिखाया जा रहा है। उन्हें समझाया जा रहा है कि उन्हें किसी की जरूरत नहीं। उन्होंने इसी के चलते मलय–निलय को कभी कोई खेल–'ब्लॉक्स', 'मेकनिक्स', 'पजल्स' नहीं भेंट किए। नरेंद्र और बहू विचित्र तब भी लगे थे जब बच्चों के बिना मांगे ही वह उन्हें विचित्र–विचित्र खेल–खिलौने लाकर दिया करते थे। वे खेल–खिलौने नन्हें मलय–निलय को अपने में उलझाए और रिझाए रहते। उन्हें किसी की जरूरत महसूस नहीं होती। कानपुर आते तो उन्हीं खेलों के साथ आते। गली के बच्चों के साथ खेलने में उनकी कोई दिलचस्पी न होती। न अपने खेलों में उन उत्सुक बच्चों को साझीदार बनाते। न हाथ लगाने देते। उन्हें खेल–खिलौने में भी षड्यंत्र की बू आती। बुद्धिविकास की आड़ में बड़ी खूबसूरती से बच्चों को संवेदना–च्युत किया जा रहा–इतना कि बच्चे कभी परिवार में न लौट सकें, न कभी अपना कोई परिवार गढ़ सकें।"[ix]

अतिभौतिकतावाद के 'वस्तुवादी दर्शन' ने मनुष्य की जगह भौतिक वस्तुओं को स्थापित कर दिया। अब मूल्य 'वस्तु' का है, मनुष्य का नहीं। पति–पत्नी जैसे मधुर संबंध के बीच वस्तुओं का हस्तक्षेप दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। 'ईंधन' उपन्यास वस्तुगत प्रवृत्ति का भाव–वृत्ति पर हावी होने की प्रामाणिक कथा है। 'घर' बनाने की बजाए 'मकान' बनाने के प्रयास आधुनिक समय की प्राथमिकता है। 'घर' भले ही बिखर जाये, परन्तु 'मकान' में बिखराव बरदाश्त नहीं है। स्निग्धा और रोहित के बीच 'वस्तुओं' की दखलअन्दाजी का उदाहरण द्रष्टव्य है–

"स्निग्धा का सामान घर से आ जाने के बाद तो उसके और मेरे बीच की दरार और भी चौड़ी दिखाई पड़ने लगी। यहाँ सारी महत्ता सामान की थी। वस्तुओं की थी। उन्हीं के अनुरूप हमें ढलना था। वस्तुएँ ही हमारा होना, हमारा अस्तित्व तय करती थीं। हम सभ्य हैं या नहीं, वस्तुएँ ही हमें बताती थीं। हम सुसंस्कृत हैं या नहीं यह जानने की पहली और अंतिम कसौटी वे वस्तुएँ थीं जिन्हें हम इस्तेमाल करते थे या नहीं करते थे।"[x]

रोहित अत्याधुनिक भौतिक वस्तुओं का जाल घर में बिछा देता है। भौतिक वस्तुओं की भरमार से घर भरा पड़ा है। यदि रिक्तता है तो वह उनके संबंधों में। संबंधों की रिक्तता को भाँपती हुई स्निग्धा अपनी संवेदना को इस प्रकार व्यक्त करती है–

"पर यह सच है कि अब हमारे घर में सबकुछ था। बस पति नहीं था। पति की कमाई थी, पति की कमाई से आयी हुई वस्तुएँ थीं और पति का प्रतिरूप बच्चा था।"[xi]

परिवार संवेदना रहित होकर बिखराव की परिणति तक पहुँचता है। पारिवारिक सदस्यों के आपसी प्रेम पर परिवार का वास्तविक रूप टिका है। 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में गुरुचरण परिवार के विषय में अपनी अवधारणा को प्रकट करता हुआ कहता है–

"परिवार का मतलब एक बीमा कम्पनी से ज्यादा क्या है? परिवार है तो इसलिए कि तुम्हारे पढ़ने–लिखने, खाने–पीने, बीमार पड़ने, बूढ़े होने की व्यवस्था ठीक रहे। असल में तो पति–पत्नी अलग–अलग रहकर दो दोस्तों की तरह मिलें, तब तो पता चले कि असल में प्रेम के कारण मिल रहे हैं, कोई बीमा कम्पनी खोलने के लिए नहीं।"[xii]

बिखराव और विघटन की नींव पर एक नयी संस्कृति का विकास हुआ जो पूर्णतः भोग–विलास से परिपूर्ण है। उपभोक्तवादी दर्शन पर आधारित जीवन शैली में आज का व्यक्ति सब कुछ भोग लेने को आतुर है। अध्यात्म व संयमित जीवन शैली के आदर्श खोखले साबित होने लगे। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की ध्वंसात्मक स्थिति को नयी सभ्यता की आधारभूमि स्वीकारा जा सकता है। इस स्थिति में समाज की जो सरंचना बन रही है, जिस पीढ़ी का निर्माण हो रहा है, उसका भविष्य कैसा होगा ? 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में पारिवारिक विघटन की स्थिति को स्पष्ट करते हुए 'लिव इन रिलेशनशिप' की संस्कृति दिखायी गयी है, जो एक घातक स्थिति है। संजय अपनी पत्नी सोनल से विमुख होकर 'आरती' नामक लड़की के साथ खुले संबंध बनाता है। सोनल को भी देश और पानी जमाने के अनुसार बदलने की सलाह देता है :–

"तुम भी क्यों नहीं ढूँढ लेती एक ब्वायफ्रेंड ?"[xiii]

इस वाक्य से जो संवेदना उभरती है, वह भारतीय मानसिकता को झिंझोड़ती है। धनंजय और के. विजया, सोनल और समीर के संबंध बे–बुनियादी है। ऐसे में भावी पीढ़ी का निर्माण होगा उसका पिता कौन होगा ? यह एक गंभीर समस्या का आगामी संकेत और प्रश्न चिह्न है जो चिन्ता का विषय है। स्त्री–पुरूष के शारीरिक संबंध 'वैवाहिक संस्था' को अनुचित ठहराते हुए उन्मुक्त भोगवृत्ति का परिचायक बन रहे है। सरला और कौशिक सर के शारीरिक संबंध इस बात का प्रमाण है :–

"शादी के बाद तो यह विश्वासघात होगा, व्यभिचार होगा, अनैतिक होगा। जो करना है, पहले कर लो। अनुभव कर लो एक बार। मर्द का स्वाद। एक ऐडवेंचर जस्ट फॉर फन![xiv]

आधुनिक नवनिर्मित समाज की युवा पीढ़ी में 'लिव इन रिलेशनशिप' प्रति आकर्षर्ण चरमसीमा पर है, क्योंकि वैवाहिक बंधन को आधुनिक पीढ़ी स्वच्छंदता में बाधक मानती है। वासना के इस मायाजाल में भावी पीढ़ी का निर्माण किन संस्कारों के बीच होगा, यह भविष्य के गर्भ में है। 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में गुरु बिना किसी वैवाहिक बंधन के स्त्रियों को भोगते हुए जीवन की राह पर अग्रसर है–

"शहर की सबसे खूबसूरत, उम्र में उससे दस साल छोटी, शादीशुदा, बिना बच्चोंवाली, किसी छोटे–मोटे राजघराने से ताल्लुक रखनेवाली राजेश्वरी देवी ने उसे भाई बना रखा है। जहाँ तक के.वी. को मालूम है या शुबहा है, गुरुचरण उस सूरुचि की साक्षात् मूर्ति महिला का फ्रेंड, फिलॉसफर, गाइड के साथ–साथ कुछ और भी है।[xv]

भोगवाद की प्रवृत्ति से धर्म भी अछूता नहीं रहा। धार्मिक आगुओं ने धर्म की आड़ में अपनी वासना–तुष्टि के साधन अपनाने से कोई परहेज नहीं किया। बाबा–कल्चर की इस संरचना में आशाराम, रामपाल, गुरमीत राम रहीम[गअप] जैसे कितने ही विलासी इसका प्रमाण है। 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में धर्मार्थ स्कूल खोलकर सामाजिक श्रद्धा बटोरने वाला बाबा शिवदास स्कूल की बच्चियों को हवस की पूर्ति का साधन मात्र समझता है। हर रात कोई–न–कोई बच्ची बाबा शिवदास के हवस का शिकार बनती है। आदिवासी गाँव का डॉक्टर इस बात की पुष्टि करता है–

"लेकिन ई बबवा साला राक्षस है राक्षस। जरूर ई बच्ची लोग को रात में पैर दबाने के लिए बुलाया होगा। उसके बाद ही छोटी बच्चियाँ पथरा जाती हैं। दर्जनों ऐसे केस उस आश्रम में मैं देख चुका हूँ। लाज, शरम, भय सब घोलकर पी गया है हरामी।[xvii]

आर्थिकता के परिवेश में नारी के शरीर का भी बाज़ारीकरण हुआ। पैसा कमाने के लिए स्त्रियाँ अपने शरीर को बाज़ार में उतार कर वेश्यावृत्ति का पेशा अपनाने लगी। 'उधर के लोग' उपन्यास में आयशा वेश्या के रूप में सामने आती है। वेश्यावृत्ति उसकी विवशता भी है, क्योंकि जरूरतमंद होने के कारण हर क्षेत्र में उसकी देह शोषण का शिकार होती है। आखिरकार वह सब काम छोड़कर 'देह' को ही रोजगार का साधन बना लेती है। कालरा नामक पात्र की मानसिकता के माध्यम से लेखक ने भोगवाद की प्रवृत्ति को उद्घाटित किया है। कालरा किसी एक स्त्री से बंधना नहीं चाहता। विवाह को वह शरीर की पूर्ति से ज्यादा कुछ नहीं समझता है। शरीर की वासना–पूर्ति के लिए स्त्री का शरीर को वह पैसे के बल पर खरीद सकता है–

"यह फफूँद घर में क्या रखें ? जब चाहो, बाजार में सिक्के उछालो, घर में लक्ष्मी बनकर, छम–छम करती आएगी। मनमर्जी का काम लो और तानकर सोओ।[xviii]

'प्रेम' और 'लिव इन रिलेशनशिप' पुरूष के लिए नए हथियार है जिनके प्रयोग से नारी का उपभोग करता है। 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में विजया और धनंजय, सरला और कौशिक, सोनल और समीर, संजय और आरती, मीनू, ढोला आदि, 'ईंधन' उपन्यास के बीना टंडन और स्निग्धा के पिता, 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में गुरुचरण और उसकी साथी स्त्रियाँ, 'ए.बी.सी.डी.' उपन्यास में ऐस्टैला, 'उधर के लोग' उपन्यास में कालरा, राना व कालगर्ल आयशा, 'ज़ीरो रोड' उपन्यास में रमेश शुक्ला, ईयाद व रानो, 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में बाबा शिवदास, 'गिलिगडु' उपन्यास में कर्नल स्वामी, अणिमा दास व जसवंत सिंह, सुनगुनियां, 'विसर्जन' उपन्यास में आदर्श व सपना तथा पंचम व सुषमा 'सुखफ़रोश' उपन्यास में अविनाश दास जैसे पात्रों के माध्यम से भोगवादी संस्कृति की पूरी तस्वीर बनती नज़र आती है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भूमण्डलीकरण ने हमारे समाज और सामाजिक रिश्तों पर गहरा प्रभाव डाला है। व्यक्ति समाज से टूटकर 'स्व' केन्द्रित बन गया है। पैसे की अन्धी दौड़ में व्यक्ति ने समाज और परिवार की सत्ता को अस्वीकार कर दिया। परिवार में पति–पत्नी के आपसी संबंध प्रेम और विश्वास

की अपेक्षा पैसे के बल पर स्थापित होने लगे। आदर्श और नैतिकता का परम्परागत ढाँचा बिखर गया। पीढ़ीगत अंतराल के तहत बूढ़े–बुजुर्ग हाशिए पर डाल दिये गये। उन्मुक्त भोगवाद ने उच्छृंखलता को बढावा देकर पशुत्व की ओर अग्रसर किया।

सन्दर्भ सूची :–

[i] शर्मा कुमुद, भूमण्डलीकरण और मीडिया, ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ–13

[ii] कटारिया, सुरेन्द्र(डॉ०), शर्मा, रवीन्द्र(सं०), वैश्वीकृत भारत प्रभाव एवं बाधाएँ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ–60

[iii] शर्मा, श्यामबाबू (डॉ०), भूमण्डलीकरण और समकालीन हिन्दी कविता, विकास प्रकाशन, पृष्ठ–17

[iv] प्रकाश स्वयं, ईंधन, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ– 120

[v] सरावगी, अलका, एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ– 195

[vi] नावरिया, अजय, उधर के लोग, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ– 147

[vii] कालिया, रवीन्द्र, ए.बी.सी.डी., वाणी प्रकाशन, पृष्ठ– 59

[viii] कालिया, रवीन्द्र, ए.बी.सी.डी., वाणी प्रकाशन, पृष्ठ– 95

[ix] मुद्गल, चित्रा, गिलिगडु, सामयिक प्रकाशन, पृष्ठ– 34

[x] स्वयं प्रकाश, ईंधन, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ– 45

[xi] प्रकाश, स्वयं, ईंधन, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ– 190

[xii] सरावगी, अलका, एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ– 108

[xiii] सिंह, काशीनाथ, रेहन पर रग्घू, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ–110

[xiv] सिंह, काशीनाथ, रेहन पर रग्घू, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ–31

[xv] सरावगी, अलका, एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ– 17

[xvi] दैनिक भास्कर, दिनाँक 26.08.2017 तथा 29.08.2017

[xvii] रणेन्द्र, ग्लोबल गाँव के देवता, भारतीय ज्ञानपीठ, पृष्ठ– 69

[xviii] नावरिया, अजय, उधर के लोग, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ– 17

विनोद कुमार

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी–विभाग, भाग सिंह खालसा कॉलेज फॉर विमिन, काला–टिब्बा, अबोहर, पंजाब।

एवम् शोधार्थी (पी–एच.डी.), हिन्दी–विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।